जिम्मेदार पितृत्व अभियान, उत्तर प्रदेश

प्रेस विज्ञप्ति

मैसवा (मेंस एक्शन फॉर स्टापिंग वायलेस अगेंस्ट वीमन), उत्तर प्रदेश द्वारा सी.एच.एस.जे. नई दिल्ली एवं फेम इण्डिया के संयुक्त तत्वावधान मे "बाल अधिकारों के संरक्षण मे पुरूषों की जिम्मेदार पिता के रूप मे भूमिका" पर राष्ट्रीय अभियान चलाया जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर शुरू हुये इस अभियान का मानना है कि जेण्डर आधारित असमानता और महिलाओं/ लड़कियों के साथ बढ़ रही हिंसा को पितृ सत्ता के प्रमुख किरदार के रूप मे पुरूष अपनी सोच और व्यवहार मे सकारात्मक बदलाव लाकर समानता आधारित, भेदभाव मुक्त तथा हिंसा मुक्त समाज की स्थापना कर सकता है। मैसवा और सी.एच.एस.जे. के द्वारा जेंडर समानता और महिला हिंसा के विरूद्ध पुरूषों के साथ करीब 10 वर्षों के कार्यों से सीख मिली है कि हर पुरूष हिंसक नहीं है, सारे पुरूष हिंसा का समर्थन नहीं करते और महिलाओं के साथ गैर बराबरी, भेदभाव तथा हिंसा के खिलाफ बहुत सारे पुरूष बेचैनी रखते हैं, खड़े होना चाहते हैं, परन्तु सामाजिक मूल्य तथा मान्यताओं के दबाव मे चुप्पी नहीं तोड़ पाते हैं और ना ही खुल कर विरोध दर्ज कर पाते हैं। यही चुप्पी हिंसा का सबसे बड़ा कारण बनती है, और ऐसे पुरूष जो महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा और गैर बराबरी के खिलाफ खड़े होना चाहते हैं उनको जगह और माहौल तथा समर्थन नहीं मिल पाता।

कोई बच्चा जन्मजात हिंसक और भेदभाव करने वाला नही होता है। सामाजीकरण की प्रक्रिया बच्चों को हिंसक, पितृसत्ता का समर्थक और भेदभाव करने वाला बनाती हैं। समाज के अंदर पारम्परिक जेण्डर आधारित मूल्य और मान्यताएं, रीति रिवाज, धारणाएं और चलन जब तक मौजूद रहेगें तब तक समानता का सपना पूरा होना संभव नही है। लेकिन एक यक्ष प्रश्न है कि इन मूल्य, मान्यताओं, रीति रिवाज, धारणाओं को कौन चुनौती देगा? क्या इसके लिए सिर्फ महिलाओं को आगे आना होगा? जबकि पितृसत्ता और जेण्डर आधारित भेदभाव व हिंसा एक सामाजिक तनाव का विषय है। अगर हम भारत के संविधान और बाल अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय समझौता (यू.एन.सी.आर.सी.) 1989 साथ ही बाल श्रम उन्मूलन, शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009, किशोर न्याय कानून आदि के क्रियान्वयन के स्तर को देखें तो भारत के हर कोने से गुणवत्ता पूर्ण क्रियान्वयन पर सवाल खड़ा होता है। भारतीय संविधान, बाल अधिकारों के समझौते और कानून, समानता और स्वतंत्रता का प्रावधान तो रखते हैं पर उनका स्तर जग जाहिर है। इसी तरह आज भी बाल श्रमिकों का नियोजन, बड़ी तादात में बच्चों का स्कूल के बाहर होना, लड़कियों के पढ़ने और सीखने के अवसरों का छीना जाना, किशोरों (लड़के–लड़कियां दोनो) के साथ यौन हिंसा की घटनायें आदि से स्पष्ट होता है कि सिर्फ कानूनी गारंटियो और सरकार की जवाबदेही बच्चों के अधिकार को संरक्षित करने में समर्थ

नहीं है, परन्तु यह जवाबदेही सरकार की है कि बच्चों के अधिकारों के संरक्षण का जिम्मा उठाये। परंतु सामाजिक जवाबदेही कहॉ है? परिवार, पंचायत, समुदाय की जवाबदेही कहॉ है? इन सवालों के उत्तर के रूप में एक राष्ट्रीय अभियान के तहत उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, झारखण्ड, आदि प्रदेशों में पुरूषों के पिता के रूप मे भूमिकाओं को सुनिश्चित कर बाल अधिकारों के संरक्षण का एक अभियान शुरू किया किया गया है। मैसवा के नेतृत्व में ''जिम्मेदार पितृत्व अभियान'' के नाम से उत्तर प्रदेश के 21 जिलों में जिला स्तरीय फोरम की साझेदारी से दिनांक 14 नवम्बर 2013 'बाल दिवस' से शुरू कर 16 दिसम्बर 2013 (निर्भया दिवस) तक सघन रूप से चलाया जायेगा। इस अभियान में गांव एवं क्षेत्र स्तरीय बैठकें/संवाद, स्कूल के बच्चों के माध्यम से रैली, नुक्कड–नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रतियोगिताएं, शपथ पत्र भरना, पम्फलेट वितरण, दीवार लेखन आदि गतिविधियो के माध्यम से पुरूषों की पिता के रूप में भूमिकाओं एवं पहल के जरिये बाल अधिकार संरक्षण में पुरूषों की भागीदारी की कोशिश की जायेगी।

इस अभियान के प्रमुख मुद्दे– जेंडर आधारित भेदभाव, बाल यौन हिंसा, बाल शिक्षण, बाल विवाह आदि मुद्दों पर पुरूषों की पिता के रूप मे भूमिकाओं को उभार कर घर, पड़ोस, समुदाय और गांव के स्तर पर बदलाव के लिये पहल की जायेगी। अभियान यह मानता है कि जब तक घर मे पुरूष अपनी पत्नी या अन्य महिलाओं के साथ जेंडर समानता आधारित व्यवहार नही करेगा तब तक बच्चों (लड़की–लड़कों/भाई–बहन) मे समानता बहाल नहीं की जा सकेगी। बच्चे के लालन पालन का जिम्मा प्रमुखतया महिलाओं का होता है अतः यह कोशिश की जायेगी कि बच्चे की देखभाल और परवरिश मे पिता (जैविक पिता या ऐसे लोग जो बच्चो की परवरिश एवं विकास की भूमिका में हैं) भी अपनी जिम्मेदारी उठाये, इस तरह का वातावरण का सृजन किया जाये। इस अभियान की सामाजिक जवाबदेही में समुदाय, पंचायत, मीडिया और बौद्धिक तबका सभी साझीदार हैं। अतः युवाओं एवं अन्य हितभागियों से अभियान मे शामिल होने, सहयोग और समर्थन करने की अपील करते हैं। आइये समाज बदलाव के सपने को पूरा करने में मिलकर प्रयास करें।

राजदेव चतुर्वेदी	नसीम अंसारी	संतोष कुशवाहा
9451113651	9415230412	8423283073